

शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक जीवन के लिए अनिवार्य तत्व
अगुवों की मार्गदर्शिका

छोटे समूहों की अगुवाई करना

अध्याय 4 : छोटे समूहों में स्वस्थ व आपसी सम्बन्धों को प्रोत्साहित करना

परिचय

छोटे समूहों की अगुवाई करना नामक यह अध्याय शिष्यता के अनिवार्य तत्व मॉड्यूल का एक भाग है। इन अध्यायों का उद्देश्य विकासशील अगुवों को कौशल व समझ द्वारा तैयार करना है ताकि वे सफलता पूर्वक छोटे समूहों की अगुवाई कर सकें। छोटा समूह बाइबल अध्ययन या शिष्यता का समूह, या कोई दूसरे प्रकार का लघु समूह हो सकता है जिसे शिष्यता या सेवा के लिए इस्तेमाल किया जाता है। एक छोटे समूह के अगुवे के रूप में तैयार होने से दूसरों को सिखाने की योग्यता में आपको फायदा होगा और साथ ही साथ सभी लोगों को इस काम में बहुत मज़ा आएगा। यह मॉड्यूल वर्तमान काल में कलीसिया की अगुवाई में शामिल लोगों या छोटे समूह के सदस्यों के लिए तैयार किया गया है। कौन जाने कि एक छोटे समूह का सदस्य किसी दूसरे समूह की ज़िम्मेदारी का कार्य भार सम्भाले।

अपेक्षित श्रोतागण

इन अध्यायों के लिए अपेक्षित श्रोतागण वे मसीही लोग हैं जो मसीही विश्वास में परिपक्व हो रहे हैं और जो गम्भीरता के साथ परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा रखते हैं। इस अध्याय से कलीसिया के उन अगुवों को भी लाभ होगा जो लोगों को ईश्वरीय सम्बन्धों व विवाह तथा परिवार के बुनियादी तत्वों की शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं।

अध्ययन कुँजी का निमार्ण एक अगुवे के रूप में आपकी सहायता करने के लिए तैयार किया गया है। इन अध्यायों की रूपरेखा को www.dehindi.org पर प्राप्त “शिष्यता के अनिवार्य तत्व की अन्य सामग्री” के साथ उपयोग किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है।

इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing



छोटे समूहों की अगुवाई करना

अध्याय 4: छोटे समूहों में स्वस्थ व आपसी सम्बन्धों को प्रोत्साहित करना

उद्देश्य

इस अध्याय का उद्देश्य रिश्तों को सशक्त करने के द्वारा स्वस्थ छोटे समूह का निर्माण करना सीखना, तथा समूह में उत्पन्न होने वाले आपसी मुद्दों को सुलझाना है।

अगुवों की टिप्पणी

बाइबल हमें बताती है कि लोहा लोहे को तेज करता है—इसका अर्थ है कि हमारी संगति में पाये जाने वाले लोगे हमें बेहतर व्यक्ति बनने में सहायता कर सकते हैं। यह छोटे समूह की ताकत है— परन्तु किसी भी छोटे समूह की कमजोरी भी हो सकती है। 'एक हाथ दो और एक हाथ लो' की नियती के बगैर रिश्ते कमजोर और क्लेश, भय, और असुरक्षा उत्पन्न करने वाले बन सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम एक दूसरे का बोझ उठाएं और एक दूसरे से प्रेम करें। इससे एक स्वस्थ समूह का पोषण होगा और उस मकसद को पूरा करेगा जिसके लिए वह समूह संगठित किया गया था। इस अध्याय में समूह के अस्वस्थ सदस्यों के लिए सलाह भी शामिल की गयी है। हो सकता है कि आपको सलाह के क्षेत्र में दूसरे मसीही स्रोतों की भी आवश्यकता पड़े, ताकि आप उन लोगों की समस्याओं का निवारण कर सकें जिनका हृदय बुरी तरह से टूटा हो या कोई मानसिक तनाव से ग्रसित हो। स्वस्थ समूहों को सक्रियता से बनाने पर, आप अपने एकत्र के फलों को देख पाएंगे।

परिचय

समूह से पूछने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों में से दो या तीन प्रश्नों का चुनाव करें।

- ❖ आपका सबसे घनिष्ठ मित्र कौन है? आपके जीवन में ऐसी कौन सी घटना घटी जिसके कारण आपकी नज़दीकियां बढ़ गयीं?
- ❖ किस कारण आप दूसरे पर भरोसा कर पाते हैं? जब आप किसी व्यक्ति पर भरोसा करते हैं, तो उनकी उपस्थिति में किसी बात को करने तथा उनके साथ आपके व्यवहार में क्या फरक पड़ता है?
- ❖ कौन सी चीज रिश्ते को मज़बूत बनाती है? एक कमजोर या अस्वस्थ रिश्ता कैसा नज़र आता है?
- ❖ एक समूह का सदस्य होने के नाते आपके आपसी व व्यक्तिगत लक्ष्य क्या हैं? (दूसरे शब्दों में, आप किस प्रकार का रिश्ता बनाना चाहते हैं, और आप क्या सीखना चाहते हैं?)



अध्ययन

समूह को निम्नलिखित बिन्दुओं की शिक्षा दें.

सिखाएं:

- ❖ **दूसरों के साथ संगति:** प्रेरितों 2:42 में पाया जाने वाला कलीसिया का उदाहरण, हमें बताता है कि शिष्यों ने चार बातों के लिए अपने जीवन को समर्पित किया:

1. प्रेरितों से शिक्षा पाने में
2. संगति
3. रोटी तोड़ने
4. प्रार्थना करने में ।

यह समझना तो आसान है कि उन्होंने क्यों अपने आपको परमेश्वर के वचन, प्रार्थना और रोटी तोड़ने के लिए समर्पित किया—लेकिन यह समझना थोड़ा मुश्किल जान पड़ता है कि उन्होंने संगति के लिए अपने को क्यों समर्पित किया। इस शब्द का मतलब क्या है?

- सच्ची मसीही संगति समाज में बनाये गये सम्बन्धों का ही परिणाम है। संगति ऐसे मसीही लोगों का समूह है, जहां सभी को एक सी ही मान्यता मिली है और उनमें हर वस्तु साझे की है।
 - इसके अर्न्तगत अपने भावनाओं और अनुभवों को आपस में साझा करना, दूसरों के बोझ उठाना, सामान्य लक्ष्य के लिए मिलकर काम करना, और अपनी चिन्ता करने से पहले समूह की भलाई की चिन्ता करना।
 - संगति का अर्थ कलीसिया के सदस्यों के बीच में दोस्ती उत्पन्न करना, और उनके साथ एक परिवार के रूप में व्यवहार करना है।
 - कलीसियाई देह बढ़ने पर, सारे सदस्यों के साथ धनिष्ठ सम्बन्ध बनाये रखना काफी कठिन काम बन जाता है।
- ❖ **स्वस्थ सम्बन्ध:** यदि रिश्ते मजबूत व स्वस्थ हों तो, एक छोटा समूह हमारे आत्मिक जीवन को धनी बनाने वाला स्रोत हो सकता है। यदि हमें पता चल जाये कि हमें समझाने वाला हमसे प्रेम करता है तो हम उसकी सलाह और सुझाव को मानने के लिए हमेशा तैयार हो जाते हैं। जब हम लोगों को गहराई से जान जाते हैं, तो यीशु का अनुसरण करते हुए हम उनके अनुभवों से सीखने लगते हैं।
- बाइबल दूसरों से हमारे सम्बन्ध को लेकर बहुतायत से बातचीत करती है। निम्नलिखित वचन केवल कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो स्वस्थ सम्बन्धों को प्रगट करते हैं:

- | | |
|------------------------------|-----------------------------|
| ○ <u>इब्रानियों 10:24-25</u> | ○ <u>कलुस्सियों 2:2</u> |
| ○ <u>सभोपदेशक 4:9-12</u> | ○ <u>याकूब 5:16</u> |
| ○ <u>नीतिवचन 27:17</u> | ○ <u>गलातियों 6:10</u> |
| ○ <u>यूहन्ना 17:21-23</u> | ○ <u>1 कुरिन्थियों 1:10</u> |
| ○ <u>कलुस्सियों 3:16</u> | |

- ❖ **विश्वासियों की एकता:** एक समूह तभी सफल होगा जब उन्हें एक दूसरे संगति में आनन्द आएगा। यह एकता व खुशहाल संगति अगुवे के द्वारा एक लक्ष्य साध कर उत्पन्न की जा सकती है। निम्नलिखित तरीकों पर ध्यान दें जिनके द्वारा संगति को समूह का एक भाग बनाया जा सकता है:



- **साझा किये गये काम:** (इब्रानियों 13:16) कोई भी सामान्य योजना या लक्ष्य समूह की नजदीक आने में मदद करेगी। काम को बांटने के लिए सुझाव:
 - किसी सेवकाई या योजना की सहायता करना(इमारत की मरम्मत करना, सेवा में सहायता करना)
 - अपने समान की सेवा करना (बीमारों या कैदियों से मिलने जाना, खाना बनाना, कपड़े बांटना, विधवाओं और बुजुर्गों की सुधि लेना)
 - कलीसिया की इमारत की पुताई, सजावट व मरम्मत करने के द्वारा सहयोग प्रदान करना।
 - सेवकाई करने के लिए किसी कार्यक्रम का आयोजन करना या करने में मदद करना(कैम्प लगाना, प्रचार सभा का आयोजन, चन्दा इकट्ठा करना)
 - सुसमाचार प्रचार सभा में सहायतार्थ सम्मिलित होना।
 - बाइबल की एक किताब को याद करना।
- **विरोध:** (याकूब 1:2-4) जब हम अपनी परेशानियों को आपस में बांटते हैं, तो हमें एक दूसरे के साथ धनिष्ठता महसूस होती है। यदि राजनैतिक या सामाजिक ताकतें आपके समाज में मसीहियों के लिए कठिनाई उत्पन्न कर रही हैं, इसका अर्थ है कि आप पहले से ही विरोध का सामना कर रहे हैं। बहुत से तरीके हैं जिनके द्वारा आप किसी मसीही साथी पर हो रहे सताव या विरोध के बारे में बता सकते हैं:
 - संसार भर में सताव सहने वाले मसीहियों के लिए प्रार्थना करना
 - समूह के अन्य लोगों के साथ बोझ व प्रार्थना निवेदन बताना।
 - जिन सदस्यों को बिमारी है, नुकसान हुआ है, या किसी और प्रकार का बोझ है, उन लोगों के लिए व्यवहारिक सहायता करना
 - ऐसी सेवकाईयों की सहायता करना जो पीड़ित तथा खतरनाक परिस्थिति में पाये जाने वाले लोगों की देखभाल करते हैं
- **आनन्द मनाना:** (1 कुरिन्थियों 10:31) जब हम किसी के साथ मिल खुशी को मनाते हैं तो इसका अर्थ है कि हम अपनी खुशी में एक दूसरे को शामिल कर रहे हैं। हमें हमारे समूह के सभी सदस्यों के गुणों, आशीषों व जीवनो के लिए आनन्द मनाना चाहिए।

ध्यान दें:

- सामुहिक रूप में जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ, ग्रेजुएशन समारोह इत्यादि को मनाना।
 - एक साथ मिलकर राष्ट्रीय या धार्मिक अवकाश का आनन्द लें।
 - अलग अलग उपलक्ष्यों पर मिलकर भोजन करना— कोई व्यक्ति लोगों को खाने पर बुलाकर मेज़बानी का आनन्द उठा सकता है, या सब लोग अपने अपने घर से भोजन लाकर एक साथ बैठकर खा सकते हैं।
 - मनोरंजन से भरपूर किसी गतिविधि में शामिल होकर एक दूसरे को बेहतर ढंग से जानना!। आप आस पास में पाये जाने वाले रोचक स्थान पर जा सकते हैं, मिलकर कोई खेल खेल सकते हैं, हो सकता है कि समूह का कोई जन आपको कोई नया खेल या जादू सिखाये और बाकि के लोग उसे सीखें।
- **सराहना करना:** (1 थिस्लुनिकियों 5:11) हम सभी को सराहना की ज़रूरत होती है, इसलिए समूह के लोगों को एक दूसरे की सराहना करनी चाहिए। यह बहुत ज़रूरी है कि हम एक दूसरे को स्वीकार करें व एक दूसरे को प्रोत्साहित करने वाले शब्दों के साथ सराहें।
 - समूह में सहयोग देने के लिए एक दूसरे का धन्यवाद करें(अध्याय में अगुवाई करने, प्रार्थना करने, भोजन का इन्तेजाम करने, मेज़बानी करने के लिए)
 - हर एक सदस्य के वरदान को पहिचाने, और समूह में उन वरदानों को इस्तेमाल करने का मौका प्रदान करें।



- कोई जन दूसरे जन की किस बात में तारीफ करता है, उसे प्रगट करने का मौका प्रदान करें। यदि आप किसी खास क्षेत्र, परमेश्वर के वचन के लिए उनके प्रेम या सेवा करने की शक्ति में किसी व्यक्ति की उन्नति को देख रहे हैं तो उन्हें सार्वजनिक तौर से सराहें।
- ❖ **लेन देन करें:** किसी भी स्वस्थ रिश्ते में आदान प्रदान की प्रक्रिया काम करती है। आदान प्रदान करने की क्रिया बराबरी की होनी चाहिए—कई बार हम बोलते हैं और दूसरा हमारी बात सुनता है लेकिन जब वे बोलें तो हमें सुनना जरूरी है। कई बार जब हमें जरूरत होती है तो वे हमारी जरूरतों को पूरी करते हैं, लेकिन बाद में हमें भी अवसर मिलता है कि हम भी अपनी उनकी सहायता कर सकें।
 - जब कोई व्यक्ति कठिन समय से होकर गुजरता है, और उसकी जरूरतें बढ़ती ही चली जाती है, उस समय पर एक स्वस्थ समूह अधिकाई से देना पसन्द करता है।
 - हमारे मन उन लोगों की वजह से कठोर हो जाते हैं जो जीवन भर लेते तो रहते हैं परन्तु देते कभी नहीं। हमें कठिन समयों पर एक दूसरे को प्रेम करना सिखाने के साथ साथ, जितना सम्भव हो सकते रिश्तों में सन्तुलन बनाये रखने के लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिए।
 - एक मजबूत व स्वस्थ समूह को एक दूसरे के प्रति स्वभाव, भरोसे व अनुग्रह से पहिचाना जाता है। उदाहरण के लिए, आकर्षक समूह के निम्नलिखित लक्षण होंगे:
 - वे अपने विचारों में सच्चे व ईमानदार होते हैं
 - दूसरों की सुनते हैं
 - अपने परेशानियां बताते हैं तथा कमज़ोरियों तथा पापों का अंगीकार करते हैं।
 - क्षमा मांगते व क्षमा करते हैं।
 - बिना रक्षात्मक रवैय्या धारण किये संशोधन को स्वीकार कर लेते हैं।
 - वे अपने व्यवहारिक कामों के द्वारा प्रेम प्रगट करते हैं तथा अपने प्रति आपके प्रेम व देखरेख को स्वीकार करते हैं।
 - दूसरों के अधीन हो जाते हैं
 - परमेश्वर पर निर्भर रहते हैं
 - उत्तरदायी होते हैं तथा दूसरों को उत्तरदायी रखते हैं।
 - जोखिम उठाकर, कुछ नया करने का प्रयास करते हैं।
 - जब लें देन के मामले में रिश्तों में कोई सन्तुलन नहीं होता, तो उन रिश्तों में जल्दी ही खटास आ जाती है। जिसके परिणाम स्वरूप समूह का सदस्य लगातार तनाव, भय उत्पन्न करने वाला या लगातार विरोध करने वाला व्यक्ति बन जाता है। अगर आप ऐसा होते देखते हैं तो अगुवे के लिए यह बिल्कुल उचित समय है कि वह आकर व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करें।

लक्ष्य

संगलित चार्ट में समूह के भीतर उत्पन्न होने वाली कुछ समस्याओं की रूपरेखा को, तथा उन समस्याओं से निपटने के लिए कुछ सुझावों को दिया गया है। इन मुद्दों को अपने समूह के साथ चर्चा करने के लिए कोई तरीका ढूँं। आप किसी नाटक या कहानी सुनाने के द्वारा उन व्यवहारों के बारे में बता सकते हो, और पूरे समूह को अवसर प्रदान कर सकते हो कि वे अपने सुझावों के द्वारा इस समस्या का समाधान करने में सहायता करें।



छोटे समूह में अस्वस्थ सम्बन्धों को संभालना		
	वर्णन	इस परिस्थिति को कैसे सम्भाला जाए
शर्मीला व्यक्ति	यह व्यक्ति समूह में कभी बात नहीं करता, हो सकता है कि वह देर से आकर जल्दी चला जाता हो और उसे दूसरों से बात करना या मिलना अच्छा नहीं लगता हो।	हालांकि सुनने में इस प्रकार के स्वभाव से हमें कोई नुकसान नहीं नजर आता है, लेकिन इस प्रकार की प्रवृत्ति से समूह का विश्वास टूट जाता है। वे बिना कुछ योगदान किये समूह से प्राप्त करते हैं। उसकी चुप्पी से समूह के लोगों को प्रतीत होगा कि वह उनका न्याय कर रहा है या उनकी आलोचना कर रहा है। अकेले में उस व्यक्ति से मिले और उसे विस्तार से बताएं कि सबके लिए सहयोग देना प्रश्न पूछना और अपनी बातों को बांटना क्यों जरूरी है। उन्हें समझाएं कि उनके पास सवालों के जवाब होना जरूरी नहीं है, और सारे ही लोग उसके मित्र हैं।
बातूना व्यक्ति	कुछ लोगों को आप एक बार अवसर दे दो तो वे कभी बोलना बन्द ही नहीं करते। ऐसे लोगों को 'एकाधिकार करने वाला' या सारी चर्चा को अपने मन पसन्द विषय की ओर मोड़कर ले जाने वाला कहा जाता है।	यह व्यक्ति समूह में मतभेद व चिन्ता हो उत्पन्न कर सकता तथा लोगों के ध्यान को अपनी ओर खींच सकता है। उन्हें दूसरों की बातें सुनने में काफी दिक्कत महसूस होती है। वे बड़े बातूने तथा लोगों से सदा सराहना की चाह करने वाले लोग होते हैं। अकेले में जाकर उस व्यक्ति को समझाएं कि उनका सहयोग देना और अपनी बातों को साझा करना बेशकीमती है, लेकिन उन्हें दूसरों को भी बोलने का अवसर प्रदान करना चाहिए। वार्तालाप के दौरान, उनके विचारों को स्वीकार करें और किसी दूसरे व्यक्ति से उसी विषय पर अपने विचार देने के लिए कहें।
जरूरत मन्द व्यक्ति	बहुत सी वजहों के चलते कई लोगों की जरूरतें दूसरों से बड़ी होती हैं। उन्हें लोगों के ध्यान या ज्यादा समय या स्रोतों की आवश्यकता होती है। कई बार उनकी मांगे इतनी ज्यादा गम्भीर होती हैं कि वे समूह के लिए परेशानी या बोझ बन जाते हैं। हर एक सभा में बस उन्हीं की समस्याओं और जरूरतों के बारे में जिक्र होने लगता है।	निश्चय की हमें एक दूसरे का बोझ उठाना चाहिए लेकिन कई बार किसी व्यक्ति का बोझ या मांग समूह की हद से बाहर हो जाती है। ऐसे समय पर किसी दूसरे पासबान या सलाहकार को बुलाकर उस व्यक्ति की मदद करना अच्छा रहेगा। आपको उन्हें समूह की सीमाओं और समूह के उद्देश्य को बताना जरूरी होगा। हो सकता है कि उनकी जरूरतें सच्ची हो लेकिन आपका समूह उतनी बड़ी जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार नहीं है। एक व्यक्ति जो हमेशा ही समूह के लोगों से मांगता रहता है, चाहे कुछ भी जाए उनके जीवन में कभी किसी के साथ अच्छा रिश्ता कायम नहीं हो सकता।
बहस करने वाला व्यक्ति	क्या आपके समूह में कोई ऐसा जन है जो आपकी हर बात पर बहस करता और दूसरों को टोकता है? चाहे कोई रुचि ले या न ले वह बहस को कोई न कोई	इस व्यक्ति की वजह से लोग बोलने या किसी के प्रश्न का उत्तर देने में भी भय महसूस कर सकते हैं। परमेश्वर के वचनों पर चर्चा करने या एक साथ मिलकर प्रभु में बढ़ने की बजाय, सभा पूरी तरह बहस और अपने अपने विश्वास की रक्षा करने में बदल जाती है। आपको इस व्यक्ति को समझाने की जरूरत है कि समूह का उद्देश्य मिलकर बढ़ना है और सभी को अपना



	मुददा खड़ा कर देते हैं। हो सकता है कि वे क्रोधित होकर अनुचित व्यवहार करें, जिससे समूह में भय उत्पन्न हो सकता है।	अपना मत रखने की आज़ादी है। व्यक्तिगत तौर पर आप उस व्यक्ति को बता सकते हैं कि उनका यह व्यवहार किस प्रकार पूरे समूह के शिक्षा पाने के माहौल को खराब कर सकता है। हो सकता है कि उनके जीवन से कुछ क्रोध दिलाने वाले मामले जुड़े हों, ऐसे में हमें आधिकारिक या कानूनी सहायता भी लेनी पड़ सकती है। यदि उनका व्यवहार नहीं बदलत तो आप उनसे समूह छोड़कर जाने के लिए कह सकते हैं।
आलोचनात्मक व्यक्ति	कई बार आपके समूह में कोई ऐसा व्यक्ति आ सकता है जो कभी किसी की बात से सहमत नहीं होता, तथा लोगों व उनकी योजनाओं की आलोचना करता है। उनका दृष्टिकोण परमेश्वर के वचनों तथा कलीसिया के प्रति अति नकारात्मक हो सकता है जिसका परिणाम बहुत घातक साबित होगा।	इस प्रकार के जटिल व नकारात्मक लोग छोटे समूह सुरक्षा व भरोसे के लिए बहुत बड़ा खतरा बन सकते हैं। हालांकि असहमत होने की अनुमति है लेकिन लगातार और हर बात पर आलोचना होने से लोग प्रतिभागिता करना बन्द कर देंगे। आलोचना करने वाले व्यक्ति को पता भी नहीं होगा कि किस प्रकार उनका स्वभाव पूरे समूह को नाश कर रहा है। ऐसे में परमेश्वर को ही इस व्यक्ति के जीवन में काम करना होगा। व्यक्तिगत तौर पर आप उनसे धीरजवन्त और आनन्द के साथ बैठने के लिए बोलें और कहें की आप अपने शब्दों व भाषा का सावधानी से इस्तेमाल करें।

सिखाएं

❖ **अस्वस्थ रिश्तों के साथ निपटना :** यदि कोई जन आपके समूह में अनुचित व्यवहार कर रहा है तो एक अगुवा होने के नाते यह आपकी जिम्मेदारी है कि उस परिस्थिति में अपने अधिकार का इस्तेमाल करें। याद रखें कि जिन लोगों के साथ यह अनुचित व्यवहार किया जा रहा है उन्हें प्रेम किये जाने की जरूरत है, क्योंकि हो सकता है कि इस व्यवहार की वजह से लोगों को दूसरे रिश्तों में भी चोट पहुंची हो।

➤ **अस्वस्थ सम्बन्ध को दर्शाने वाले कुछ लक्षण:** आपका लक्ष्य ऐसे सकारात्मक रिश्तों को प्रोत्साहित करना है जहां लोग सुरक्षित महसूस होने वाले माहौल में सीखकर बढ़ सकें। जब वह आजादी खतरे में पड़ जाती है तो समूह की सक्रियता खत्म हो जाती है। इन लक्षणों पर नज़र रखें:

- समूह के लोग एक व्यक्ति को नज़रअन्दाज़ करने लगते हैं।
- समूह के लोग अपने व्यक्तिगत विचारों को साझा करने में रुची नहीं लेते।
- समूह में लोगों की उपस्थिति कम होने लगती है।
- सामूहिक सभा को जिस मकसद से प्रारम्भ किया गया था उस पर कोई बात न होकर, एक ही व्यक्ति की समस्याओं पर चर्चा हो रही है।
- चर्चा का समय ज्यादातर बहस या वाद विवाद में बदल जा रहा है।

➤ **सलाह :** कई बार लोगों के साथ गलत व्यवहार करने वालों का सामना करना जरूरी हो जाता है। जब यह बात स्पष्ट हो जाए कि वे सहयोग देने से कहीं ज्यादा मांग करते हैं, या उनकी वजह से समूह की सेहत पर बुरा असर पड़ रहा है, तो उनके साथ निजी तौर पर मिलना अच्छा है।

- उनके लिए प्रार्थना करें।
- दोष लगाने की बजाय प्रश्न करते हुए मुददे पर चर्चा करें।
- उनके इस व्यवहार के परिणाम के बारे में जरूर बताएं।
- उन्हें उनकी सीमाओं के बारे में भी जरूर बताएं।
- उनकी समस्या को बाइबल आधारित समाधान बताएं।



- यदि बात बहुत बढ़ जाए तो ऐसे हाथों में उनको सौंप दें जो वास्तव में उनकी सहायता कर सकें
 - यदि आप उनके व्यवहार में कोई सुधार देखें तो सराहें व सहयोग दें।
- **कठिन निर्णय लेना:** अगुवा होने के नाते आपको समूह तथा उसमें पाये जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति का ख्याल रखना जरूरी है। लेकिन जब यह बात आपके सामने स्पष्ट हो जाए कि किसी एक व्यक्ति के कारण समूह को चला पाना मुश्किल हो रहा है तो आप उस व्यक्ति से समूह छोड़कर जाने के लिए कह सकते हैं। यह कदम केवल तब उठाया जाना चाहिए जब उस व्यक्ति को समूह की तरफ से काफी सहयोग मिला हो और उसको समझाने के लिए किसी अन्य पासवान या सलाहकार की सहायता ली जा चुकी हो, और फिर भी उनमें बदलने के कोई आसार नजर न आ रहे हों। (उदाहरण के लिए, यदि वे लगातार बाइबल की सच्चाई के खिलाफ बहस करते रहें और उनमें बदलने की इच्छा नजर न आये, तो उनके लिए बाइबल अध्ययन में बैठने से कोई लाभ नहीं है।)
- ❖ **महत्वपूर्ण व सुरक्षित महसूस करना:** दूसरे लोगों के साथ संगति करने के लिए हमें सुरक्षित और महत्वपूर्ण महसूस होना जरूरी है। यह भावना हमें अपनी असली पहिचान बताने तथा उन मुद्दों को साझा करने में मदद करती है जिससे हम संघर्ष कर रहे होते हैं। जब हम अकेले होते हैं तो यह दिखावा करना आसान होता है कि पाप हम पर प्रभुता नहीं कर रहा है, लेकिन जब हम नियमित तौर पर दूसरों के साथ मिलना पसन्द कर देते हैं, तब धीरज व स्वेच्छा के साथ हमारा त्यागपूर्ण ढंग से प्रेम करना परखा जाता है। छोटा समूह परमेश्वर के ज्ञान व मसीह की समानता में बढ़ने के लिए उपयुक्त स्थान है। इस बढौतरी के लिए सही माहौल बनाने से हमें बहुतायत से फल प्राप्त होता है।

चर्चा

- ❖ एक स्वस्थ समूह दूसरों के प्रति अच्छे स्वभाव से पहिचाना जाता है। निम्नलिखित क्रिया में से कौन सी आपके लिए कठिन है? आप उन पर जय प्राप्त करने के लिए कौन से कदम उठा सकते हैं?
- अपने विचारों में सच्चे व ईमानदार बने।
 - धीरज के साथ दूसरों की सुनें।
 - अपने परेशानियां बताये तथा कमजोरियों व पापों का अंगीकार करें।
 - क्षमा मांगे व क्षमा करें।
 - बिना रक्षात्मक रवैय्या धारण किये संशोधन को स्वीकार करें।
 - वे अपने व्यवहारिक कामों के द्वारा प्रेम प्रगट करें तथा अपने प्रति आपके प्रेम व देखरेख को स्वीकार करें।
 - दूसरों के अधीन हो जाएं।
 - परमेश्वर पर निर्भर रहें।
 - उत्तरदायी बने हैं तथा दूसरों को उत्तरदायी रखें।
 - जोखिम उठाकर, कुछ नया करने का प्रयास करें।
- ❖ समूह के लोगों के रिश्ते को मज़बूत बनाने तथा उनके भरोसे बढ़ाने के लिए आपका समूह किस प्रकार की गतिविधि में भाग ले सकता है?
- ❖ छोटे समूह में लोगों का ईमानदार होना क्यों जरूरी है? परमेश्वर की वचनों को समझने व उसे अपने जीवन में इस्तेमाल करने के लिए सच्चा व ईमानदार होने की क्या जरूरत है?
- ❖ हमारे लिए छोटे समूह का भाग बनना क्यों जरूरी है? हम समूह में ऐसा क्या खास सीखते हैं जो हम कभी अकेले नहीं सीख सकते?



प्रार्थना

प्रार्थना के साथ अध्याय को समाप्त करें। प्रार्थना करें कि जो भी प्रतिभागी आगे चलकर छोटे समूह की अगुवाई करे उसमें समूह के सदस्यों के लिए प्रेम, तरस व उनकी अगुवाई करने के लिए बुद्धि हो। प्रार्थना करें कि समूह के सदस्यों का रिश्ता भरोसेमन्द और आपस में उत्तरदायित्व निभाने वाला हो। प्रार्थना करें कि वे परीक्षा व विरोध के समय में, एक दूसरे का सहयोग करें, और ऐसे करते हुए वे एकता के साथ बढ़ौत्तरी करें। परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसने हमें कभी अकेला नहीं छोड़ा है, उसका पवित्र आत्मा हमारे साथ है और परमेश्वर व एक दूसरे के साथ संगति करने में वह हमारी सहायता करता है।